Date - 27/07/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Space and Time ; Kant - 2nd Part

Scanned with CamScanner

(2) अनुभवातीत व्याख्या के अन्तर्गत कांट यह दिखाना चाहते हैं कि, देश और काल की प्रागनुभविकता पर ही कतिपय संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक विज्ञान निर्भर करते हैं। कांट के अनुसार यद्यपि देश-काल सम्बन्धी समस्त निर्णय अनुभव से प्राप्त होते हैं, परन्तु हमारे ज्ञान में आने के पश्चात् वे तत्काल ही प्रागनुभविक हो जाते हैं। इसलिए देश-काल सम्बन्धी निर्णय सार्वभौम एवं अनिवार्य होते हैं, यहाँ कांट का मानना है कि यद्यपि देश-काल के प्रत्यय मानसिक हैं किन्तु वे काल्पनिक नहीं हैं। उनमें वस्तुनिष्ठ वैधता पाई जाती है, कांट के अनुसार ज्यामिति का सम्बन्ध देश से है, अंकगणित का सम्बन्ध काल से है और गति-विज्ञान (Mechanist) देश और काल दोनों पर निर्भर है। देश-काल के कारण ही गणित की प्रतिज्ञप्तियाँ प्रागनुभविक एवं संश्लेषणात्मक होती हैं।

चूँकि देश और काल सभी अनुभवों में एक समान रूप से पाए जाते हैं, जिनके द्वारा सभी संवेदनाएँ ग्रहण की जाती हैं, अतः इनसे जो ज्ञान होगा वह सार्वभौम होगा। फिर ये शुद्ध प्रत्यक्ष हैं, अतः इन पर आधारित ज्ञान संश्लेषणात्मक भी होगा। इसी आधार पर कांट गणितीय ज्ञान की व्याख्या करते हैं।

स्पष्ट है कि कांट के मत में देश और काल परमार्थ पदार्थ के गुण नहीं हैं। इनकी हमसे स्वतंत्र सत्ता नहीं है। हम देश और काल में नहीं, बल्कि देश और काल हममें हैं। अतः पारमार्थिक दृष्टि से देश और काल हममें हैं अतः पारमार्थिक दृष्टि से देश और काल आत्मनिष्ठ हैं, परन्तु देश और काल की आत्मनिष्ठता गौण गुणों की भाँति नहीं है। गौण गुण इसलिए आत्मनिष्ठ माने जाते हैं क्योंकि वे हम पर निर्भर होते हैं और परिणामस्वरूप विभिन्न व्यक्तियों को उसकी चेतना भिन्न-भिन्न रूपों में होती है। परन्तु यहाँ देश और काल की आत्मनिष्ठता ऐसी है कि ये सामान्य रूप से सभी ज्ञाताओं में पाए जाते हैं। ये किसी व्यक्ति विशेष के मन के आकार नहीं हैं। इसलिए ये सार्वभौम हैं। किसी भी पदार्थ ~~होता है~~ का अनुभव किसी को देश और काल में ही होता है। चूँकि सभी को ऐसा अनुभव होता है इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि देश और काल वस्तुनिष्ठ हैं। पर वास्तव में वे तो मन के ही आकार हैं।

इसलिए व्यावहारिक जीवन में हमें देश और काल वस्तुनिष्ठ प्रतीत होते हैं। पर वास्तव में वे आत्मनिष्ठ हैं। कांट का कथन है कि इन्द्रियानुभविक दृष्टि से देश और काल वास्तविक हैं। परन्तु अनुभवातीत (Transcedentally) दृष्टि से देश और काल प्रत्ययात्मक या मानसिक हैं।

अतः कांट का देश-काल सिद्धान्त केवल प्रत्यक्ष-जगत की व्याख्या करता है। परमार्थ पर इसका आरोप नहीं किया जा सकता। कांट का यह मत अद्वैत वेदान्त से साम्य रखता है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार दृश्यमान जगत व्यवहारतः सत और परमार्थतः असत है।

आलोचना।

* देश और काल की कांटीय व्याख्या यूक्लिड की ज्यामिति और न्यूटन की भौतिकी की मान्यता पर आधारित है। कांट ने देश के तीन आयाम माने थे। किन्तु आइन्स्टीन के द्वारा प्रतिपादित गति की सापेक्षता के सिद्धान्त के अनुसार काल देश का चौथा आयाम है। इस रूप में यहाँ काल को देश के समकक्ष नहीं माना जा सकता।
* कांट ने देश और काल को क्रमशः बाह्य इन्द्रिय और आंतरिक इन्द्रिय का आकार मानकर इन्हें पृथक किया है परन्तु आजकल देश-काल को संश्लिष्ट रूप में समझा जाता है। एलेक्जेंडर का तर्क है कि काल के बिना देश एक शून्यमात्र रह जाएगा। और देश के बिना काल भी अबोधगम्य होगा। जो कुछ भी घटित होता है वह किसी समय में घटित होता है। और फिर जो समय में घटित होता है - वह किसी जगह घटित होता है। गति के संप्रत्यय का विश्लेषण दोनों की निरंतरता को और भी स्पष्ट कर देता है।
* देश और काल से परे वस्तु का अपना वास्तविक स्वरूप क्या है, यहाँ अज्ञात एवं अज्ञेय रह जाता है।

Scanned with CamScanner